प्रातःक्लास ओमशांति 12.9.67

ओमशांति। बच्चों को पहले2 बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। मीठे2 बच्चे जब यहां बैठे हो तो अपन को आत्मा समझो। और कोई तरफ बुद्धि नहीं जानी चाहिए। यह तुम बच्चे जानते हो हम आत्माएं हैं। पार्ट हम आत्मा बजाती हैं इस शरीर द्वारा। आत्मा अविनाशी ,शरीर विनाशी है। तो तुम बच्चों को देही अभिमानी बन बाप की याद में रहनी है। हम आत्मा हैं ,चाहे तो इन आर्गन्स से काम लियो वा न लियो। अपन को शरीर से अलग समझना है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। देह को भूल जाओ। हम आत्मा इनडिपेंड हैं। हमको एक बाप की और कोई को याद न करना है। जीते जी मौत की अवस्था में रहना है। हम आत्मा का योग रहना है अब बाप के साथ। बाकी तो दुनियां से ,घर से मर गए। कहते हैं आप मरे तो मर गई दुनियां। अब जीते मर गए हैं। हम आत्मा शिवबाबा के हैं। शरीर का भान उड़ाते रहना चाहिए। यह तो पुराना शरीर है ना। पुरानी चीज को छोड़ा जाता है। अपन को अशरीरी समझो। अब हमको बाप को याद करते2 बाप के पास जाना है। ऐसे करते2 फिर तुमको हेर पड़ जावेंगे। अभी तो हमको घर जाना है। फिर हम इस पुरानी दुनियां को याद क्यों करें?एकांत में बैठ अपने से ऐसे2 अपने साथ मेहनत करनी है। भक्ति मार्ग में भी अंदर कोठरी में बैठ माला आदि (फेरते) हैं। पूजा करते हैं। तुम भी एकांत में बैठ यह कोशिश करो तो हेर पड़ जावेगी। तुमको मुख से तो कुछ बोलना न है। इसमें है बुद्धि की बात। शिवबाबा तो है सिखलाने वाला। उनको तो पुरुषार्थ नहीं करना है। पुरुषार्थ यह बाबा करते हैं। जैसे यह पुरुषार्थ करते हैं,वह फिर तुम बच्चों को भी सिखलाते हैं। जितना हो सके ऐसे बैठकर खयाल करो। अभी हमको जाना है अपने घर। इस शरीर को तो यहां छोड़ना है। बाप की याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। अंदर यह चिंतन चलना चाहिए। ....कुछ बोलना न है। भक्तिमार्ग में भी या ब्रह्म को ,तत्व को या कोई शिव को भी याद करते हैं ;परंतु वह याद कोई पुरुषार्थ नहीं है। बाप का परिचय ही नहीं है तो याद कैसे करें?तुमको अब बाप का परिचय मिला हुआ है। सवेरे उठकर ऐसे अपन साथ बातें करते रहो। विचार–सागर–मंथन करते रहो। बाप को याद करो। बाबा हम अभी आया कि आया आपके सच्चे गोद में। वह है रुहानी गोद। गोद नहीं कहेंगे। यह तो रहने का सीान है। तो ऐसे2 अपने साथ बातें करनी चाहिए। जैसे चर्ये अपने से बातें करते हैं। वह तो मुख से आवाज करते हैं। तुम अंदर में अपने से बातें करो। बाबा आया हुआ है। बाबा कल्प2 आकर हमको राजयोग सिखाते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो और चक्र को याद करो। स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। बाप में भी सारा ज्ञान है ना। वह फिर तुमको देते हैं। तुमको त्रिकालदर्शी बनना है। तीनों कालों का अर्थात् आदि,मध्य,अंत को तुम जानते हो। बाप भी है, परमात्मा। उनको शरीर नहीं है। अब इस शरीर में बैठ तुमको समझाते हैं। यह वंडरफुल बात है ना। भागीरथ पर विराजमान होंगे तो जरूर दूसरी आत्मा है ना। बहुत जन्मों के अंत का जन्म है। नम्बरवन पावन वह ही फिर नम्बरवन पतित बनते हैं। यह अपन को भगवान या विष्णु आदि तो कहते नहीं। यहां एक भी आत्मा पावन है नहीं। सब पतित ही हैं। तो बाबा बच्चों को समझाते हैं ऐसे2 विचार–सागर–मंथन करो तो इनसे तुमको खुशी भी रहेगी। इसमें एकांत भी जरूर चाहिए। एक की याद में शरीर का अंत होता है उनको कहा जाता है एकांत। यह चमरी छूट जावेगी। सन्यासी भी ब्रह्म की याद में वा तत्व की याद में रहते हैं। उस याद में रहते2 शरीर का भान टूट जाता है। बस, हमको ब्रह्म में लीन होना है। ऐसे बैठ जाते हैं। तपस्या में बैठे2 शरीर छोड़ देते हैं। भक्ति में तो मनुष्य बहुत धक्के खाते हैं। इसमें धक्के खाने की बात नहीं है। याद में ही रहना है। पिछाड़ी को कोई याद न रहे। गृहस्थ व्यवहार में तो रहनी ही है। बाकी टाइम निकालना है। स्टुडेंट को पढ़ाई का शौक होता है ना। यह पढ़ाई है। अपन को आत्मा न समझने से बाप ,टीचर ,गुरू सबको भूल जाते हैं। एकांत में बैठ ऐसे2 बातें करो।

गृहस्थ में रहते वायब्रेशन ठीक नहीं रहता। अगर अलग प्रबंध है तो एक कोठरी में एकांत में बैठ माताओं को तो दिन में भी टाइम मिलता है। बच्चे आदि स्कूल में चले जाते हैं। जितना टाइम मिले यही कोशिश करते रहो। तुमको तो एक घर है। बाप को तो कितने ढेर के ढेर दुकान हैं। और ही वृद्धि होती जाती है। कितने समाचार आते हैं। मनुष्य को धंधे आदि की चिंता होती है तो नींद भी फिट जाते हैं। यह व्यापार है ना। कितना बड़ा सराफ है। कितने बड़ी मटा–सुटा करते हैं। पुरानी शरीर आदि लेकर नया देता है। सबको रास्ता बताते हैं। यह भी धंधा उनको करना है। यह व्यापार तो बहुत बड़ा है। व्यापारी को व्यापार का ही खयाल रहता है। बाबा ऐसे2 प्रबंध करते हैं। फिर बतलाते हैं ऐसे2 करो। जितना तुम बाप की याद में रहेंगे तो आटोमेटिकली नींद फिट जावेगा। कमाई में आत्मा को बहुत मजा आवेगी। कमाई के लिए मनुष्य रात भी जगते हैं। सीजन में सारी रात भी दुकान खुला रहता है। तुम्हारी कमाई रात और सवेरे अच्छी होती है। जितना याद में रहेंगे,स्वदर्शनचक्रधारी बनेंगे, त्रिकालदर्शी बनेंगे 21जन्म लिए धन इकट्ठा करते हो। मनुष्य साहुकार बनने लिए पुरुषार्थ करते हैं ना। तुम भी बाप को याद करेंगे। विकर्म विनाश होंगे। बल मिलेगा। ऐसे2 अपन साथ बातें करनी हैं। बाबा जो पुरुषार्थ करते हैं वह बतलाते हैं। शिवबाबा तो है ही सिखलाने वाला। याद की यात्रा पर न रहेंगे तो बहुत घाटा पड़ जावेगा ;क्योंकि सिर पर पापों का बोझ बहुत है। अब जमा करना है। एक को याद करन है और त्रिकालदर्शी बनना है। यह मिलकियत आधा कल्प लिए इकट्ठी करनी है। यह तो बहुत वैल्युएबल है। विचार–सागर–मंथन कर रत्न निकालनी है। बाबा जैसे खुद करते हैं बच्चों को भी युकित बतलाते हैं। कहते हैं बाबा माया के तूफान बहुत आते हैं। बाबा कहते हैं हमको सबसे जास्ती आती है। अज्ञान काल में भी ऐसे तूफान नहीं आते थे। जितना हो सके अपनी कमाई करनी है। यह ही काम आनी है। एकांत में बैठ बाप को याद करनी है। फुर्सत तो है। सर्विस भी मंदिरों आदि में बहुत कर सकते हैं। (बैज) जरूर लगा रहे। सभी समझ जावेंगे यह रुहानी मिलिट्री है। तुम लिखते भी हो 9वर्ष के अंदर स्वर्ग की स्थापन कर रहे हैं। आदि सनातन देवी देवता धर्म था। अब नहीं है। जो फिर स्थापन करते हैं। यह लक्ष्मी–नारायण एम ऑब्जेक्ट है ना। कोई समय यह ट्रांसलाइट का चित्र बैटरी सहित तुम उठाय कर परिक्रमा देंगे। और सबको कहेंगे यह राज्य अब 8वर्ष के अंदर ,7वर्ष के अंदर हम स्थापन कर रहे हैं। यह ताबूत सबसे फर्स्टक्लास तुम्हारा निकलेगा। यह चित्र बहुत नामीग्रामी हो जावेगा। बाबा को विचार आता है इनसे भी बड़ा बनाया जाये। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट भी है नर से नारायण बनने की। आदि सनातन देवी देवता धर्म था ना। सिर्फ एक तो नहीं था। उन्हों की राजधानी थी ना। यह स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। अब बाप कहते हैं मनमनाभव। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाबा ऐसा प्लान बनाय रहे हैं ;परंतु यह बनने में भी टाइम लगता है। कहते हैं गीता का सप्ताह मनावेंगे। यह सब प्लान कल्प पहले मुआफिक बन रही है। परिक्रमा में यह चित्र लेना पड़ेगा। इनको देखकर तो सब खुश होंगे। तुम कहेंगे बाप को और इस वर्सा को याद करो। मनमनाभव। यह गीता के अक्षर हैं ना। भगवान शिवबाबा है। वह कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होये। त्रिकालदर्शी बनो। 84के चक्र को याद करो तो यह बन जावेंगे। बैज भी तुम सौगात देते रहो। शिवबाबा का भंडारा है तो सदैव भरपूर रहे। आगे चलकर बहुत सर्विस होगी। एमऑब्जेक्ट कितनी क्लीयर है। इन्हों के राज्य में एक ही राज्य ,एक ही धर्म था। बहुत साहुकार थे। मुनष्य चाहते हैं एक धर्म, एक राज्य ,एक भाषा हो। मनुष्य जो चाहते वह असार दिखाई पड़ता है। फिर समझेंगे यह तो ठीक कहते हैं। एक ही राज्य, 100प्रतिशत पवित्रता ,सुख–शांति ,सम्पत्ति इनके राज्य में थे। सो अब फिर से स्थापन कर रहे हें। फिर तुमको खुशी भी रहेगी। याद में रहने से ही तीर लगेगा। शांति में रह थोड़े ही अक्षर बोलनी है। जास्ती आवाज नहीं। गीत ,कविताएं आदि कुछ भी बाबा पसंद नहीं करते हैं। बाहर वाले मनुष्यों के साथ रेस न करनी है। तुम्हारी बात ही और है।

अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बस। बाबा सलोगन भी अच्छे2 बनाय देंगे। जो मनुष्य पढ़कर जागें। बच्चे वृद्धि को पाते रहते हैं। खजाना तो भरपूर रहता है। बच्चों का दिया हुआ फिर बच्चों का(को) ही काम आता है। बाप तो पैसे नहीं ले आते हैं ना। तुम्हारी चीज ही तुम्हारी काम में आती है। भारतवासी समझते हैं हम बहुत कुछ सुधार कर रहे हैं। 7वर्ष के अंदर इतना अनाज हो जायेगा। यह होगा। अनाज की कब दिक्कत नहीं होगी। और तुम जानते हो ऐसे हालत होगी जो अन्न खाने के लिए नहीं मिलेगा। एक तरफ कन्ट्रोल बंद करते हैं दूसरी तरफ भाव बढ़ाय देते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम 21जन्म लिए अपना राज्य, भाग्य पाय रहे हैं। यह थोड़ी बहुत तकलीफ तो सहन करना ही है। कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। अतिइन्द्रिय सुख गोप–गोपियों का गाया जाता है। ढेर बच्चे हो जावेंगे। जो भी सैम्पलिंग वाले होंगे वह आते जावेंगे। झाड़ यहां ही बढ़ना है ना। स्थापना हो रही है। और धर्मों में ऐसे नहीं होता। वह तो उपर से आते हैं। जैसे कि झाड़ स्थापन हुआ ही पड़ा है। नम्बरवार आते जावेंगे। तकलीफ कुछ नहीं। उपर से आय कर पार्ट बजाना है। इसमें महिमा की बात नहीं। धर्म सीापक के पिछाड़ी आते रहते हैं। वह शिक्षा क्या देंगे?सदगति की?कुछ भी नहीं। यहां तो बाप भविष्य देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं संगमयुग पर। सैम्पलिंग लगाते हैं ना। पहले पौधों को कुंडी में लगाय फिर नीचे लगाय देते हैं। वृद्धि होती जाती है। तुम भी अभी पौधे लग रहे हो। फिर सतयुग में वृद्धि को पाय राज–भाग पावेंगे। तुम नई दुनियां की स्थापना करते हो। मनुष्य समझते हैं अजुन कलियुग में बहुत वर्ष पड़े हैं ;क्योंकि शास्त्रों में लाखों वर्ष लगाय दिया है। समझते हैं कलियुग में अजुन 40हजार वर्ष पड़े हैं। फिर बाप आये हैं नई दुनियां बनावेंगे। कई समझते हैं यह वही महाभारत लड़ाई है। गीता का भगवान जरूर होगा। तुम बतलाते हो कृष्ण तो था नहीं। सारी दुनियां इन बातों में मूंझी हुई है। बाप के बदली नाम डाल दिया है कृष्ण का। बाप ने समझाया है कृष्ण तो 84जन्म लेते हैं। सब डिफरेंट। एक फीचर्स न मिले दूसरे से। तो यहां फिर कृष्ण कैसे आवेगा?कहते हैं 40हजार वर्ष बाद भगवान आता है। फिर कृष्ण द्वापर में तो हुआ नहीं। कोई भी इन बातों पर विचार नहीं करते हैं। तुम समझते हो कृष्ण तो सतयुग का प्रिंस है। वह फिर द्वापर में कहां से आवेगा?कृष्ण थोड़े ही सर्वव्यापी है। इस लक्ष्मी–नारायण के चित्र को देखने से ही समझ में आ जाता है शिवबाबा यह वर्सा दे रहे हैं। सतयुग का स्थापना करने वाला बाप ही है। तुम रचना को भी जान गए हो रचता बाप द्वारा। यह गोला, झाड़ आदि की चित्र कोई कम थोड़े ही हैं एक दिन सब चित्र तुम्हारे पास ट्रांसलाइट की बन जावेगी। फिर सब कहेंगे हमको ऐसे ही चित्र चाहिए। बाबा प्रबंध कर रहे हैं। ट्रांसलाइट की चित्र बनवाने से फिर विहंग मार्ग की सर्विस हो जावेगी। तुम्हारे पास ग्राहक इतने आवेंगे जो फुर्सत नहीं रहेगी। ढेर आवेंगे। बहुत खुश होंगे। दिन प्रतिदिन तुम्हारा फोस भरता जाता है। ड्रामा अनुसार जो फूल बनने वाले होंगे उनको टच होगा। तुम बच्चों को ऐसे नहीं लिखना है कि बाबा इनकी बुद्धि को टच करेंगे। टच कोइ बाबा को थोड़े ही करना है। समय पर आपे ही टच होगा। बाप तो रास्ता बतावेंगे या टच करेंगे। बहुत बच्चियों लिखती हैं हमारी पति की बुद्धि को टच करो। ऐसे सबकी बुद्धियों को टच कर दे फिर तो सब स्वर्ग में इकट्ठे हो जावेंगे। पढ़ाई की ही मेहनत है। तुम खुदाई खिजमतगार हो ना सच्ची2। बाबा पहले से ही बताय देते हैं क्या2 करना है। ऐसे2 चित्र ले जाने पड़ेंगे। सीढ़ी का चित्र ले जाना पड़े। ड्रामा अनुसार स्थापना तो होनी ही है। बाबा सर्विस के लिए जो डायरैक्शन देते हैं उस पर भी ध्यान देना है। बाबा कहते हैं बैजेज किसम2 के लाखों बनाओ। कोई को भी समझाकर यह देते जाओ। ट्रेन की टिकटें लेकर 100 मील तक सर्विस कर आओ। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। एक गाड़ी से दूसरे में, फिर तीसरे में। बहुत सहज है। बच्चों को सर्विस का शौक रहना चाहिए। चित्र जहां बन सकते हैं तो बनाने की कोशिश करो। सीढ़ी, लक्ष्मी–नारायण का चित्र यह (फर्स्टक्लास)चित्र है। ओम।